

महिला कथाकारों के साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ रेखा वसंतराव मुले

सहायक प्राध्यापक

वसन्तदादा पाटिल कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय

पटोदा जिला बीड, महाराष्ट्र.

भारत एक सुसंस्कृत राष्ट्र है इतिहास गवाह है। इतिहास गवाह है की प्रेरक शक्ति के रूप में नारी सदैव नैपथ्य में रही है। बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में न केवल भारत वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नारी की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। तथा कथित आज स्त्री विश्वरंगमंच अवतीर्ण हुई है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला विश्व रंग मंच पर अवतीर्ण हुई है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष इसक प्रमाण माना जाता है। बीसवी शताब्दी का नारी को दिया गया यह अधिकार सर्वाधिक अमूल्य एव अविस्मरणी है।

महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने तथा उन्हें शोषण से बचाने के कानून बनाने का सिलसिला आजादी के बाद से ही जारी है। स्त्रियों के हितों के लिए फौजदारी कानून अधिक अनुकूल बनाएँ गये। कानून को महिलाओं की समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनाते का प्रयास किए जाए। आज महिलाओं के हितों के प्रति समाज के अन्य सभी अंगों की तुलना न्याय पालिका सबसे अधिक संवेदनशील है। कानून और अदालती फैसलों ने महिलाओं में आत्मविश्वास एव आत्मसम्मान का भाव जगाने में सराहनीय भूमिका निभाई है।

आज शिक्षित महिलाएँ की गरीबी बीमारी प्रदूषण तथा बढ़ती जैसी समस्याओं से लड़ भी सकती है। राजनीति शिक्षा, चिकित्सा कला साहित्य व्यापार प्रशासन जैसी सभी क्षेत्रों में महिलाएँ पुरुषों के समान और कही कही तो उनसे भी अधिक सफलता के साथ काम कर रही है। चेतनागत विकास में सामाजिक, संस्कृतिक, राज्यनैतिक स्तर पर उसे उचित रूप में स्त्रियाँ प्रमुख भागिदारी में बदलते संदर्भ में स्त्री विमर्श का वैश्विक आयाम विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं का अस्तित्व एवं आत्मिक सम्मान महिलाओं ने समेहने की चेष्टा की है।

आज महिला लेखिकाओं ने हिन्दी साहित्य में चित्रित महिला लेखन के जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया है। हिन्दी साहित्य में स्त्रियों के सामाजिक दायित्व का निर्वाह नये सामाजिक मुद्दों की प्रतिष्ठा रुठियों का बहिष्कार विवाह विषयक बदलते दृष्टिकोण प्रौढ- अविवाहित स्त्रियों की स्थिति तथा स्त्री विषयक स्थितिका चित्रण महिला लेखिकाये सक्षम रही है।

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हमारे दिन की शुरुआत वैश्वीकरण से प्रभावित चीजों से होती है। और नौद मच्छर भगाने वाले विभिन्न कंपनियों के साधनों से वैश्वीकरण केवल भारत तक सीमित है ऐसी बात नहीं

इसने पूरे विश्व को राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक, धार्मिक साहित्यिक सभी क्षेत्रों में प्रभावित किया है।

शैला एल. क्रोचर ने कहाँ है की, वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्वस्तर पर रूपान्तरण की प्रक्रिया है। वैश्वीकरण शब्द अंग्रेजी के ग्लोबलाइजेशन का हिन्दी रूपांतरण है। ग्लोबलाइजेशन के लिए हिन्दी में भूमंडलीकरण शब्द का प्रयोग किया जाता है। आज वैश्वीकरण के कारण विश्व मनुष्य आर्थिक सबलीकरण चाह रहा है। न कि सभी संस्कृतियों के मुल्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है और नही उसमें समरसता लानेका प्रयास वस्तुतः सभी महान संस्कृतियों के मूलभूत तत्व समान की है। वसुधैव कुटुंबकम् न कि केवल भैतिक सुख ऐसी अनेकानेक चुनौतियाँ आज हमारे सामने डटकर खडी है। आज वैश्वीकरण के कुछ लाभ ही है। आज ज्ञान, विज्ञान, तकनी की चिकित्सा सूचना संचार आदि में अभूतपूर्व प्रगती का लाभ पूरा विश्व उठा रहा है।

भारत मे भूमंडलीकरण के छतरी के नीचे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का जो हमला आज हो रहा है । केवल हमारी अर्थव्यवस्था पर नही है। इसे समझना जरूरी है। यह हमला प्रगतीकामी जीवंत भारतीय संस्कृति परंपरा जीवन शैली पर ही नाही बलकी वैचारिक संघर्ष से जैसे जैसे होते हुए लोक तांत्रिक मूल्यों पर भी है।

आज विश्वग्राम की कल्पना मे बाजारवाद हावी होता जा रहा है। और लोगों की इच्छा तथा शक्ति तथा मनोकामनाओं को शरीरिक सुख सुविधा और मौज मस्ती के मार्ग पर चलाने के अनुकूल परिवेश की सृष्टि हो रही है। और ऐसी परिस्थितियों में साहित्य की भूमिका बढ जाती है। साहित्यकारों के जवाबदेही, सम समाजिकता, सम्बदता आवश्यभावी हो जाती है। परिणाम स्वरुप सामाजिक अर्थिक सांस्कृतिक राजनीतिक धार्मिक परिवर्तनों के प्रभाव और साहित्य का सक्रिय होना जरूरी है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि भारत में सन १९९० के बाद वैश्वीकरण की शुरुआत हुई है। जिसके केंद्र में बाजारवाद पूंजीवाद है। इस वैश्वीकरण ने हमारे समाज राजनीति शिक्षा धर्म अर्थव्यवस्था संस्कृति एवं समाज को काफी हद तक प्रभावित किया है। वैश्वीकरण ने हमारे सामने कुछ चुनौतियाँ खी की है तो कुछ लाभ भी पहुँचाए है इस लाभ और चुनौतियों को हमारे हिन्दी साहित्य ने बराबर चित्रित किया है।

हिन्दी साहित्य में नये नये लेखको के साथ लेखिकाए भी उभरकर सामने आयी है। जिन्होने हिन्दी साहित्य को बहुमुल्या योगदान दिया है। जिसमे प्रमुख है कृष्णा सोबती ममता का लिया, नासिरा शर्मा, मधुकांकरियु अलका सरावगी, प्रभखेतान, दिप्ती खंडेवाल चंद्रकांत, मन्नु भंडारी, उषा प्रियवंद, चित्रा मुदगल, मृणाल पाण्डेय, मदुला र्ग आदि लेखिका ओने वसुधैव कुटूम्बकम् की उक्ति के समान ही आज पुरा

विश्वविश्वग्राम बन गया है। विश्व में घटने वाली हर घटना वह कही भी घटीत क्यो न हो उसका असर विश्व पर दिखाई देता है। वैश्वीकरण के इस माहिलो में नई नई समस्याए आज समाज के सामने है। इन सभी महिला लेखिका औने उन सभी समस्याओं को वाणी देने का काम महिला लेखिका ओने किया है।

वैश्वीकरण के कारण आज नगर, महानगर, सामान्य जनता आकर्षण केंद्र बन गया है। वैश्वीकरण से प्रभावित हो कर इक्कीसवी सदी की महिला कथाकारोंने अनेकाअनेक पहलुओं को अपने कथा साहित्यय के माध्यमसे हमारे सामने रखने का प्रयास किया है। वैश्वीकरण के कारण सहज रूप से साधनों की उपलब्धता ने हमारे अन्दर प्रादेशिकता आंतकवाद, विस्थापन भोगवृत्ती भैतिकलित्सा को भडकाया है। कम समय में वगैर परिक्रम किये बिना ज्यादा पाने की भावना को बढावा दिया है।

कथा सतीसर लेखिका चन्द्रकांता व्दारा कश्मीर जन जीवन पर लिखित उपन्यास है भारत का स्वर्ग कही जानेवाली कश्मीर रुपी धरती लहुलुहान जिन्दगी जिने को बाध्य है उपन्यास में आम आदमी, सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक परिस्थितियों में जो बदलाव वैश्वीकरण के कारण आया है, वह दिखाने का प्रयास किया गया है। चन्द्रकांता जी की कहानियों नर वैश्वीकरण का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

संक्षेप में कृम कह सकते है कि विश्वीकरण के कारण निर्मित प्रभावित समाज जीवन को इक्कीसवी सदी के महिला कथाकारोंने ईमानदारी के साथ व्यक्त किया है।

इक्कीसवी सदी के महिला कथाकासे के साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव दिखाई देता है। उनके विचारों भावों शैली में थी अन्तर दिखाई देनलगा है। उनके विचारों भावों शैली में थी अन्तर दिखाई देन लगा है। इन महिला कथाकारोंने अपने साहित्य के कथात को में अपने साहित्य के कथान को में आंतकवाद विस्थापित हुए लोगे की समस्या बदलते नाते रिश्ते स्त्री की समस्या आदि विषयों पर अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है। महिला कथाकारों ने विषय के अनुरूप अपने कथान को का विस्तार किया है। जिस कारण कथानक का फलक अधिक बढ गया है। उपन्यास मे हर पहलुओं पर विचार किया गया है। कथानक कों रोचक बनाने के लिए संदर्भो घटना प्रसंगो का प्रयोग किया गया है। जो कथानक हो रोचक सजीव एवं प्रभावोत्पादक बनाने में सक्षम है।

देशकाल वातावरण यह कथा साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। कथा को यथार्थ एवं जीवंत रूप प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण है। अत्यंत विश्वसनीय एवं स्वभाविक लगता है। जिसे पढकर ऐसा लगता है कि लेखिका ओने देशकाल का चयन न करके चल चित्रों के भांति पान्को के सामने पेश किया है। सभी महिला कथा कारो में कथानक के अनुसार पत्रो का चयन कर उनके अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। उर्दू, अंग्रेजी,

पंजाबी, कश्मीरी आदि भाषाओं के शब्द मिलते हैं। उनके कथा साहित्य में संवादात्मक पूर्वदिप्त आत्मकथात्मक वर्णनात्मक प्रतीकात्मक आदि शैलियों का प्रयोग हुआ है।

पात्रों का चयन करते समय शील, स्वभाव आहार व्यवहार उनकी संवेदना, स्मृती निर्णय शक्ति कल्पना आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है। जो वैश्वीकरण के युग के लगते हैं। साथ ही कथान के अनुसार पात्रों का चयन किया गया है।

स्त्री अपने अधिकारों को पाने के लिए लड़ रही है। उसकी अनेक समस्याओं का निराकरण करने का लिए जैसे ही चरित्रों का निर्माण इन महिला कथाकारों ने किया है। यह चरित्र वैश्वीकरण से प्रभावित दिखाई देते हैं। प्रत्येक महिला लेखिकाओं ने साहित्य का निर्माण करते समय विशिष्ट उद्देश्य सामने रखकर ही साहित्य का निर्माण किया है। जीवन में उद्देश्य का होना बहुत महत्वपूर्ण है। इन महिला कथाकारों ने नारी की पीड़ा दुःख दर्द को देखा भोगा है। और उससे बाहर निकलने के लिए रास्ता भी खोज निकाला है। साथ ही समाज में चल रही मुद्राओं देश की समस्या रोजगार, बेकारी, आंतकवाद आदि समस्याओं का स्पष्ट चित्रण उन्होंने अपने साहित्य में किया है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि वैश्वीकरण से प्रभावित होकर लेखन करनेवाली महिला कथाकारों ने वैश्वीकरण से प्रभावित समाज किया है। यह करते समय समाज में आयी असंवेदनशील यांत्रिकता ने कथा साहित्य के कक्ष को प्रभावित किया है। २००० के बाद के महिला कथाकारों ने खुली दृष्टि से स्वीकार किया है।

विश्वमहिला सशक्तिकरण के नारे को जनजन तक पहुंचाया है। शिल्प की दृष्टि से भी वैश्वीकरण का प्रभाव कथानक के रचना से लेकर संवाद योजना देशकाल वातावरण भाषा और उद्देश्य तक दिखाई देता है। आज महिला कथा साहित्य भाव, विचार भाषा शैली और उद्देश्य सभी दृष्टियों से वैश्वीकरण से प्रभावित है। महिला कथा साहित्य दया क्षमा परोपकार त्याग समष्टि विचार संयुक्त परिवार इत्यानियत करुणा राष्ट्रप्रेम संस्कृति प्रेम बुजुर्गों का सन्मान मातृपितृ सेवा नैतिकता समता बंधुता स्वतंत्र्यता न्याय आदि मानवीय मूल्यों की शिक्षा देता है। सभी महिला कथाकारों ने अपने कथा साहित्य में केवल महिलाओं से सम्बंधित समस्याओं को नहीं रेखांकित किया है। बहिल वैश्वीकरण से प्रभावित भारतीय समाज की अनेकाने समस्याओं को रेखांकित किया है। जिसमें स्त्री, युवा, बुढ़े सभी का समावेश है। इन महिला कथाकारों ने उच्च मध्यवर्ग और निम्नवर्ग की समस्याओं को अपने कथा साहित्य में स्थान दिया इन्होंने स्त्रीयों के साथ साथ दलितों

आदिवासियो पिछडो को भी अपने कथा साहित्य में स्थान दिया संक्षेप- में हम कह सकते है, की संभवतः महिला कथा कैसे वैश्वीकरण के इस युग के भारतीय समाज को समग्रता के साथ चित्रीत किया है।

निष्कर्ष :-

आज के दौर में संस्कृति का भी बाजार गर्म हुआ है। महिला कथा साहित्य में चित्रीत इक्कीसवीं सदी में नारी की सामाजिक स्थिति यह है। कि वह अपनी चाहतों इच्छाओं के अनुरूप जी भी नहीं पा रही है।

महिला लेखिकाओं ने हिन्दी साहित्य में चित्रीत नारी जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया है। इन लेखिकाओं ने हिन्दी साहित्य में नारिय के सामाजिक दायित्व का निर्वाह लेखिकाओं ने किया है। सभी महिला लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में घटित घटनाओं के संदर्भ प्रस्तुत करके समाज जीवन की पोल खोलने का प्रभावी काम किया है।

संदर्भ सूची :-

१. राजकिशोर स्त्री परम्परा और आधुनिकता पृ १६७
२. मैत्रेयी पुष्पा विजन पृ
३. चन्द्रकांता कथा सतीसर पृ. ३९५
४. चित्रा मुद्गल बयान भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली सं. २००५
५. ममता कालिया दौड वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्र. स २०००
६. जया जादवानी तत्वमसि वाणी प्रकाश नई दिल्ली सं २००२.